



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

~~पीन के सावर~~

दिनांक 16.2.2021 पृष्ठ संख्या 7 कॉलम 3-6

■ हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना कार्यशाला आयोजित

जल संरक्षण और फसल विविधिकरण समय की मांग : डा. ए.के. सिंह

हिसार, 15 फरवरी (सुरेंद्र सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विस्तार शिक्षा निदेशालय ने सोमवार को एक कार्यशाला का आयोजन किया। इस वर्चुअल कार्यशाला का आयोजन हक्की के अलावा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने किया। इस मौके पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उy महानिदेशक डॉ. ए.के. सिंह ने कहा कि जल संरक्षण और फसलों का विविधिकरण मौजूदा समय की अति जरूरी मांग है। इसके लिए वैज्ञानिकों को ऐसी योजनाएं बनानी होंगी जिससे न केवल जल का संरक्षण हो बल्कि किसान फसल विविधिकरण को भी अपनाने के लिए सहमत हो जाए। इस मौके पर हक्की कूलपति प्रोफेसर समर सिंह विशेष अतिथि के रूप में मौजूद रहे।

इस कार्यशाला में आईसीएआर की



वर्कशॉप के दौरान वैज्ञानिकों को संबोधित करते मुख्यातिथि व मौजूद वैज्ञानिक।

कृषि तकनीकी अनुयोग संस्थान, जोन-2 जोधपुर, राजस्थान के करीब 67 कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि चावल व गेहूं के फसल चक्र को बदलना बहुत ज़रूरी है ताकि पानी का अधिक से अधिक संरक्षण किया जा सके।

इन कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिक हुए शामिल

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ.

आर.एस. हुड्डा ने बताया कि इस कार्यशाला में विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2021 की कार्ययोजना को लेकर विस्तारण्वर्क चर्चा की और भविष्य के लिए किसान हितैषी योजनाओं को प्राथमिकता दी। इस कार्यशाला में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से हिसार, फरीदाबाद, फतेहबाद, कैथल, जीद, रोहतक, सोनीपत, घिवारी, यमुनानगर, झज्जर,

आधुनिक तकनीक पर किसानों को करें
जागरूक : कुलपति

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि किसानों को नई कृषि तकनीकों के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता है, ताकि उन्हें अपनी कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सक्षम बनाया जा सके। इसके लिए वैज्ञानिकों का कर्तव्य बनता है कि वे किसानों को विश्वविद्यालय द्वारा विकासित आधुनिक तकनीकों जैसे जीरो टिलज, लेजर लेवलिंग, बेड प्लाटिंग, सूखम एवं टपका सिंचाई आदि को अपनाने के लिए जागरूक करें।

कुरुक्षेत्र, महेंद्रगढ़, सिरसा, पानीपत, एनडीआरआई करनाल, आईएआरआई नई दिल्ली, कृषि विज्ञान केंद्र दिल्ली, गैर सरकारी संगठन अंबाला व रेवाड़ी आदि के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... अभियान

दिनांक 16.02.2021 पृष्ठ संख्या..... ३ कॉलम..... ।—५

जल संरक्षण

हरियाणा और दिल्ली के कृषि विज्ञान केंद्रों की गत्य स्तरीय कार्यशाला आयोजित

पानी बचाने के लिए फसल चक्र जरूरी : डॉ. एके सिंह

बाई सिटी रिपोर्टर

हिसार। जल संरक्षण और फसलों का विविधीकरण मौजूदा समय की अति जरूरी मांग है। इसके लिए वैज्ञानिकों को ऐसी योजनाएं बनानी होंगी जिससे न केवल जल का संरक्षण हो बल्कि किसान फसल विविधीकरण को भी अपनाने के लिए सहमत हो जाएं।

फसल चक्र को बदलना बहुत जरूरी है ताकि पानी का अधिक से अधिक संरक्षण किया जा सके। ये विचार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (विस्तार शिक्षा) डॉ. एके सिंह ने कहे। वे एचएयू में हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की गत्य स्तरीय योजना कार्यशाला को ऑनलाइन माध्यम से बताएँ मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे जबकि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह विशिष्ट अतिथि रहे। इस वर्चुअल



वैज्ञानिकों को संबोधित करते मुख्यातिथि व मौजूद वैज्ञानिक। संवाद

वर्ष 2021 की योजनाओं को लेकर मंथन

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुड्डा ने बताया कि इस कार्यशाला में विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2021 की कार्ययोजना को लेकर मंथन किया। कार्यशाला में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से हिसार, फरीदाबाद, फतेहाबाद, कैथल, जीद, रोहतक, सोनीपत, भिवानी, यमुनानगर, झज्जर, कुरुक्षेत्र, महेंद्रगढ़, सिरसा, पानीपत, एनडीआरआई करनाल, आईएआरआई नई दिल्ली, कृषि विज्ञान केंद्र दिल्ली, गैर सरकारी संगठन अंबाला व रेवाड़ी आदि के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया।

मिट्टी के पोषक तत्वों की जांच जरूरी

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि मिट्टी और पानी जैसे बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों का बचाने के लिए संरक्षण कृषि पर जोर देना होगा। मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए पोषक तत्वों के अतिरिक्त खनन की जांच करनी होगी। प्रदेश में स्थूल और मूक्षम पोषक तत्वों दोनों के असंतुलित उपयोग की मुख्य समस्या है इसलिए हमें फसल उत्पादकता को बनाए रखने के लिए डर्वर्कों की सिफारिश और अपनाने के बीच की खाई को पाठना होगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

१२३५ क्रमांक

दिनांक १६.२.२०२१ पृष्ठ संख्या २ कॉलम २५

डॉ. एके सिंह बोले- चावल और गेहूं के फसल चक्र को बदलना जरूरी ताकि जल संरक्षण हो एचएयू में हरियाणा और दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्यस्तरीय कार्यशाला हुई

भास्कर न्यूज़ | हिसार

जल संरक्षण और फसलों का विविधिकरण मौजूदा समय की जरूरी मांग है। इसके लिए वैज्ञानिकों को ऐसी योजनाएं बनानी होंगी, जिससे न केवल जल का संरक्षण हो बल्कि किसान फसल विविधिकरण को अपनाने के लिए सहमत हो जाए।

यह विचार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (विस्तार शिक्षा) डॉ. एके सिंह ने व्यक्त किए। वह हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना कार्यशाला को ऑनलाइन माध्यम से बताएं मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे और विवि के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह विशिष्ट अतिथि थे। इस बच्चुंबल कार्यशाला का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद



एचएयू में वर्कशेप के दौरान वैज्ञानिकों को संबोधित करते मुख्यातिथि व मौजूद वैज्ञानिक।

नई दिल्ली व एचएयू हिसार के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ आईसीएआर के गीत से किया गया। इस कार्यशाला में आईसीएआर की कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, जोन-2 जोधपुर (राजस्थान) के करीब 67 कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि चावल व गेहूं के फसल चक्र को बदलना बहुत जरूरी है ताकि पानी का

अधिक से अधिक संरक्षण किया जा सके। एचएयू के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि किसानों को नई कृषि तकनीकों के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता है, ताकि उन्हें अपनी कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सक्षम बनाया जा सके। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुडा ने बताया कि इस कार्यशाला में विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2021 की कार्ययोजना को लेकर चर्चाएं की।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	15.02.2021	--	--

जल संरक्षण समय की मांग : डॉ. सिंह

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। जल संरक्षण और फसलों का विविधकरण मौजूदा समय की अति जरूरी मांग है। इसके लिए वैज्ञानिकों को ऐसी योजनाएं बनानी होंगी जिससे न केवल जल का संरक्षण हो बल्कि किसान फसल विविधकरण को भी अपनाने के लिए सहमत हो जाए। ये विचार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित किया गया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप कार्यशाला का शुभारंभ आईसीएआर के गीत से महानिदेशक(विस्तार शिक्षा) डॉ. ए.के. सिंह ने किया गया। इस कार्यशाला में आईसीएआर की कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, जोन-2 जोधपुर(राजस्थान)के करीब 67 कृषि विज्ञान केंद्रों के गव्य विकास विभाग अपनाने के लिए आधुनिक तकनीक अपनाने के लिए किसानों को जागरूक करने के लिए वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। आधुनिक तकनीक अपनाने के लिए किसानों को जागरूक करने के लिए वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। आधुनिक तकनीक अपनाने के लिए किसानों को जागरूक करने के लिए वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया।



शिक्षित करने की आवश्यकता है, ताकि उन्हें अपनी कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सक्षम बनाया जा सके। इसके लिए वैज्ञानिकों का कर्तव्य बनता है कि वे किसानों को विश्वविद्यालय द्वारा विकास आधुनिक तकनीकों जैसे जीरो टिलेज, लेजर लेवलिंग, बेड प्लार्टिंग, सूक्ष्म एवं टपका सिंचाई आदि को अपनाने के लिए जागरूक करें। मिट्टी और पानी जैसे बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए संरक्षण कृषि पर जोर देना चाहिए। देश की खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रदेश में स्थूल और सूक्ष्म पोषक तत्वों दोनों के असंतुलित उपयोग की मुख्य समस्या है। इसलिए, हमें फसल उत्पादकता को बनाए रखने के लिए उर्वरकों की सिफारिश और अपनाने के बीच की खाई को पाटना होगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	15.02.2021	--	--

हिसार/अन्य

पांच बजे 3

हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना (2021) कार्यशाला आयोजित

जल संरक्षण और फसल विविधिकरण समय की मांग : डॉ. सिंह

पांच बजे ब्लॉग

हिसार। जल संभव्य और फसलों का विविधिकरण मौजूदा समय की अतीत जलसी मांग है। इसके लिए वैज्ञानिकों को ऐसी योजनाएं बनानी होती हैं जिससे न केवल जल का संरक्षण किया जाए, बल्कि समाज के लिए सहायता दी जाए। ये विचार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उत्तर मण्डलीदारक (विज्ञान विभाग) डॉ. ए.क. सिंह ने कहे: वे हार्याणा व दिल्ली राज्य के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना कार्यशाला को अल्लाहबाद माध्यम से बहतर मुख्यालिखि संस्थानों कर रहे थे जबकि कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्राप्तसर समर्पित अधिकृत अधिकृत थे। इन बीच अल्लाहबाद कार्यशाला का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली व घोटाली चरण स्तरीय हार्याणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विस्तर विभाग निदेशालय द्वारा आयोजित किया गया। कार्यशाला का ऊपरी अधिकारी अद्योतक अपनाने के लिए अनुसंधान एवं अन्य कार्यशाला में अद्योतक अपनाने के कृषि विभागीय अनुसंधान और ऊन-2 जोधपुर



(राजधानी) के बीच 67 कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने विश्वविद्यालय के कृषिपक्षी प्रोफेसर समर्पित वैज्ञानिकों ने विस्तर दिया। उल्लेख करने के लिए वैज्ञानिकों ने कहा कि विज्ञान के फलस्वरूप को बढ़ावाना करने के बारे में विविध विज्ञानों के बीच असंतुलित उपयोग को मुख्य समस्या है। इसलिए, हमें फसल उत्पादकों को बढ़ावा देने के लिए उत्कृष्ट विकास की ओर भविष्य के लिए किसान हितीय योजनाओं को प्रार्थना की जा सकती है। अब यह को बढ़ावी मार्ग, उत्पादकों और औद्योगिक विकास के बीच स्तर के कारण, उत्पादक कृषि पूर्ण का महत्वपूर्ण होता है। कृषि उत्पादों में स्थानांतरित किया जा रहा है। ये कारंक विकासों की खाद्य सुधाएँ और आधुनिकता के अवसरों को बढ़ावा देने में जल्द रुक है। स्वयं अधिक प्राप्तिकर होने वाले संसाधन पानी, मिट्टी, ऊनेक, अन्य ग्रासानीक इनपुट, खाद्य और लोग हैं। हिस्सा दिया

इतेवें, लोअर लोवलिंग, बेड प्लाटिंग, सूखम एवं टाका स्थिरों को लिए जानाने के लिए विद्युत आपाने जी योजी जी सहज आवश्यकता है, जो योजी की जाती को कम करने, मिट्टी के कार्बन निर्माण को बढ़ावा देना, योजी के बाहर तरलों को कम करने और मिट्टी के कार्बन आपाने में महावर्षी भूमिका निभा सकती है। इन कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिक हुए शामिल विस्तर विभाग निदेशक डॉ. अ.ए.एस. हुड्डू ने बताया कि इन कार्यशालाएँ में विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2021 की कार्यशाला को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा की ओर भविष्य के लिए किसान हितीय योजनाओं को प्रार्थना की जा सकती है। इन कार्यशालाएँ में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से विस्तर, फटोदाचार, फलोदाचार, कैमल, ऊन, गोहाक, सोनीपत, भिवानी, मधुमेहान, इजार, कुरुबेज, महेंद्रगढ़, सिरस, पानीपत, महीनीआओआई कामना, आपानाराहाई नई दिल्ली, कृषि विज्ञान केंद्र दिल्ली, रंग सकारी संस्थान अवधान व रेखा की ओर के वैज्ञानिकों ने हिस्सा दिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	15.02.2021	--	--

वर्कशॉप हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना कार्यशाला आयोजित

किसानों को नई कृषि तकनीकों के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता : कुलपति प्रो. समर सिंह

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। अल संशोधन और फसलों का विविधकरण मैंजुदा समय की अति जरूरी भौमि है। इसके लिए वैज्ञानिकों को ऐसी योजनाएं बनानी होंगी जिससे न केवल जल का संरक्षण हो बल्कि किसान फसल विविधकरण की भी अपनी के लिए सहभाग हो जाए। ये विचार भालीय कृषि अनुसंधान परिषद के द्वाय सहायित्रक (वित्तीय विधा) द्वाय ए. के. सिंह ने कहे। वे हारियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों को गम्य स्तरीय योजना कार्यशाला को अनिलाइन माध्यम से बताए। मुख्यालियि संबोधित कर रहे थे औं जबकि कुलपति प्रोफेसर समर, सिंह विशिष्ट अधिकारी थे। इस कार्यशाला में आईसीएआर की कृषि तकनीकों अनुप्रयोग संवाद, जीन-2 जीधपुर (राजधानी) के करीब 67 कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि



हिसार। वर्कशॉप के दीर्घ वैज्ञानिकों को संबोधित करते मुख्यालियि व मैंजुद वैज्ञानिक। चालत व गेहू के फसल चक्र को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की आवश्यकता है, ताकि उन्हें वे किसानों को विश्वविद्यालय द्वारा बदलना बहुत जरूरी है ताकि पानी के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा। अपनी कृषि उत्पादकता बढ़ाने में विकल्पित आधुनिक तकनीकों जैसे लकड़ी के बारे में शिक्षित करने वैज्ञानिकों का कर्तव्य बनता है कि प्लाटिंग, सूखम एवं टपका सिंचाई

आदि को अपनाने के लिए जारीकर क। मिट्टी और पानी जैसे बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए सरकार कृषि पर जो देना चाहिए।

विद्यार्थी विद्यार्थी ने बताया कि इस कार्यशाला में विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2021 की कार्यवैयक्ति को लेकर विद्यार्थी वर्षी की ओं और भवित्व के लिए किसान हितीय योजनाओं को प्रशंसित किया दी। इस कार्यशाला में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से हिसार, फटेहबाद, कैबल, जीन, गोहतर, मोनीपथ, निवारी, यमुनानगर, छावर, कुरुक्षेत्र, महेंद्रगढ़, तिरसा, पानीपथ, एनडीआरआई नई दिल्ली, कृषि विज्ञान केंद्र दिल्ली, और सरकारी संवित अवकाश व रोड़ा आदि के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	15.02.2021	--	--

'फसलों का विविधिकरण समय की मांग'

हिसार/15 फरवरी/रिपोर्टर

जल संरक्षण और फसलों का विविधिकरण मौजूदा समय की अति जरूरी मांग है। इसके लिए वैज्ञानिकों को ऐसी योजनाएं बनानी होंगी जिससे न केवल जल का संक्षण हो बल्कि किसान फसल विविधिकरण को भी अपनाने के लिए सहमत हो जाए। ये विचार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (विस्तार शिक्षा) डॉ. एके सिंह ने रखे। वे हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना कार्यशाला को ऑनलाइन माध्यम से बतीर मुख्यालिथ संबोधित कर रहे थे जबकि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह विशिष्ट अधियिथ थे। इस वर्चुअल कार्यशाला का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली व चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ आईसीएआर के गीत से किया गया। इस कार्यशाला में आईसीएआर की कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, जोन-2 जोधपुर (राजस्थान) के करीब 67 कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि चावल व गेहूं के फसल चक्र को बदलना बहुत जरूरी है ताकि पानी का अधिक से अधिक संरक्षण किया जा सके। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि किसानों का नई कृषि तकनीकों के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता है, ताकि उन्हें अपनी कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सक्षम बनाया जा सके। इसके लिए वैज्ञानिकों का कर्तव्य बनता है कि वे किसानों को विश्वविद्यालय द्वारा विकसित आधुनिक तकनीकों जैसे जीरो टिलेज, लेजर लेवलिंग, बेड प्लाटिंग, सूक्ष्म एवं टाटका सिंचाई आदि को अपनाने के लिए जागरूक करें। मिट्टी और पानी जैसे बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए संक्षण कृषि पर जोर देना चाहिए। मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए पोषक तत्वों के अतिरिक्त खनन की जांच करनी होगी। देश की खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रदेश में स्थूल और सूक्ष्म पोषक तत्वों दोनों के असंतुलित उपयोग की मुख्य समस्या है। इसलिए, हमें फसल उत्पादकता को बनाए रखने के लिए उर्वरकों की सिफारिश और अपनाने के बीच की खाई को पाटना होगा। आवास की बढ़ती मांग, शहरीकरण और आद्यायीकरण के बढ़ते स्तर के कारण, उपजाऊ कृषि भूमि का महत्वपूर्ण क्षेत्र गैर-कृषि उपयोग में स्थानांतरित किया जा रहा है। ये कारक किसानों की खाद्य सुरक्षा और आजीविका के अवसरों को खत्तरे में डाल रहे हैं। सबसे अधिक प्रभावित होने वाले संसाधन पानी, मिट्टी, उर्वरक, अन्य रासायनिक इनपुट, वायु और लोग हैं। इसलिए, संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकी (आरसीटी) पर ध्यान देने की सख्त आवश्यकता है, जो खेती की लागत को कम करने, मिट्टी के काबिन निर्माण को बहतर बनाने, पानी के बहाव को कम करने और मिट्टी के क्षरण आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुड्डा ने बताया कि इस कार्यशाला में विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2021 की कार्ययोजना को लेकर चर्चा की और भविष्य के लिए किसान हितैषी योजनाओं को प्राथमिकता दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा वाटिका	15.02.2021	--	--

जल संरक्षण और फसल विविधिकरण समय की मांग : डॉ. ए.के. सिंह

हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना कार्यशाला आयोजित

वाटिका@हिसार। जल संरक्षण और फसलों का विविधिकरण मौजूदा समय की अति जरूरी मांग है। इसके लिए वैज्ञानिकों को ऐसी योजनाएं बनानी होंगी जिससे न केवल जल का संरक्षण ही बल्कि किसान फसल विविधिकरण को भी अपनाने के लिए सहात हो जाए। वे विद्या भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक(विस्तार शिक्षा) डॉ. ए.के. सिंह ने कहे। वे हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना कार्यशाला को आईनाइन माहात्म्य से बताये। मुख्यालिपि संवेदित कर रहे थे जबकि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह विशिष्ट अतिथि थे।

इस वर्ष अलंकारी विद्यालय का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली व चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ



आईसीएआर के गीत से किया गया। इस कार्यशाला में आईसीएआर की कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, जॉन-2 जोधपुर (राजस्थान) के करीब 67 कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि चावल व गेहूँ के फसल चक्र को बढ़ाना बहुत जरूरी है ताकि यानी का अधिक से अधिक संरक्षण किया जा सके। जोधपुरी चारण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि किसानों को नई कृषि तकनीकों के बारे

में शिक्षित करने की आवश्यकता है, ताकि उन्हें अपनी कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सहाय बनाया जा सके। इसके लिए वैज्ञानिकों का कर्तव्य बनता है कि वे किसानों को विश्वविद्यालय द्वारा विकारिस अधुनिक तकनीकों जैसे जीरो एवं टपका सिंचाई आदि को अपनाने के लिए संसाधन प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए संरक्षण करें। मिट्टी और पानी जैसे बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए संरक्षण कृषि पर जोर देना चाहिए। मिट्टी के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने, पानी के बहाव को कम करने और मिट्टी के क्षरण आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	16.02.2021	--	--

चावल व गेहूं का फसल चक्र बदलना बहुत जरूरी : डॉ. ए.के. सिंह



पाठकपक्ष न्यूज़

हिसार, 16 फरवरी : जल संरक्षण और फसलों का विविधकरण मौजूदा समय की अति जरूरी मांग है। इसके लिए वैज्ञानिकों को ऐसी योजनाएं बनानी होंगी जिससे न केवल जल का संरक्षण हो बल्कि किसान फसल विविधकरण को भी अपनाने के लिए सहभत हो जाए। ये विचार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (विस्तार शिक्षा) डॉ. ए.के. सिंह ने कहे। वे हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना कार्यशाला को ऑनलाइन माध्यम से बताएं मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे जबकि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह विशिष्ट अतिथि थे। इस वर्चुअल कार्यशाला का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली व चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

जीरो टिलेज, लेजर लेवलिंग, बेड प्लांटिंग, सूक्ष्म एवं टपका सिंचाई आदि को अपनाने के लिए जागरूक करे। मिट्टी और पानी जैसे बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए संरक्षण कृषि पर जो देना चाहए। मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए पोषक तत्वों के अतिरिक्त खनन की जांच करनी होगी। देश की खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मुद्रा स्वास्थ्य को बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रदेश में स्थूल और सूक्ष्म पोषक तत्वों दोनों के असंतुलित उपयोग की मुख्य समस्या है। इसलिए, हमें फसल उत्पादकता को बनाए रखने के लिए उर्वरकों की सिफारिश और अपनाने की जांच की खाई को पाठना होगा। आवास की बढ़ती मांग, शहरीकरण और औद्योगीकरण के बढ़ते स्तर के कारण, उपजाऊ कृषि भूमि का महत्वपूर्ण क्षेत्र गैर-कृषि उपयोग में स्थानांतरित किया जा रहा है। ये कारक किसानों की खाद्य सुरक्षा और आजीविका के अवसरों को खतरे में डाल रहे हैं। सबसे अधिक प्रभावित होने वाले संसाधन पानी,

मिट्टी, उर्वरक, अन्य रासायनिक इनपुट, बायु और लोग हैं। इसलिए, संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकी (आरसीटी) पर ध्यान देने की सख्त आवश्यकता है, जो खेती की लागत को कम करने, मिट्टी के कार्बन निर्माण को बेहतर बनाने, पानी के बहाव को कम करने और मिट्टी के क्षरण आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा ने बताया कि इस कार्यशाला में विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2021 की कार्ययोजना को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा की और भविष्य के लिए किसान हितैषी योजनाओं को प्राथमिकता दी। इस कार्यशाला में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से हिसार, फरीदाबाद, फतेहाबाद, कैथल, जोंद, रोहतक, सोनीपत, भिवानी, यमुनानगर, झजर, कुरुक्षेत्र, महेंद्रगढ़, सिरसा, पानीपत, एनडीआरआई करनाल, आईएआरआई नई दिल्ली, कृषि विज्ञान केंद्र दिल्ली, गैर सरकारी संगठन अंबाला व रेवाड़ी आदि के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया।